Bareilly, Friday,
18 July 2025
BAREILLY EDITION
Price ₹3.50/-
Pages 10

दैनिक जागरण

PAGE NO :III BOTTOM

अपने घर की छत बन रही हूं, मैं कुछ-कुछ मां जैसी बन रही हूं

जागरण संवाददाता, बरेली : एसआरएमएस रिद्धिमा में 'साहित्य सरिता' के अंतर्गत गुरुवार शाम को कवि सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें कवियों ने आध्यात्म, प्रेम, सामाजिक सद्भाव, भ्रष्टाचार और हास्य-व्यंग्य को केंद्रित कर कविता पाठ किया। अंकित तुलसी ने अपनी कविता मां जगदम्बा को समर्पित कर उनका शब्द चित्र प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन अश्विनी चौहान ने किया।

लखनऊ के कवि दिव्यांश रावत ने सुनाया, अपने हैं सब पराया कोई नहीं, पर मेरे दुख में आया कोई नहीं, जब खड़ा था उठाते थे सब, जब गिरा तो उठाता कोई नहीं।

युवा कवियत्री स्नेह सिंह ने कविता के माध्यम से सावन के परिदृश्य को खींचा, 'सावन की ये उमंग, भस्म से जो खेले रंग, ऐसा रूप मनमोहक विकराल है। शिक्षा का मोल हमने ही आज बेच खाया, सत्ता में बैठा हर शख्स विद्वान है।

शाहजहांपुर के उमेश शाक्य ने सुनाया, होते इतने प्रवीण गंजे यहां दवाई ढूंढ लेते हैं, बूढ़े भी यहां अपने लिए लुगाई ढूंढ लेते हैं। बरेली की अंशु गुप्ता ने सुनाया, अपने घर की छत बन रही हूं, मैं कुछ-कुछ मां जैसी बन रही हूं।

बदायूं के अखिलेश ठाकुर ने सुनाया, जग में अगर औरत नहीं होती, ये वीरान हो गया होता और वक्त पर गर खिजां नहीं आती गुल को अभिमान हो गया होता'।

डा. कमलकांत तिवारी ने सुनाया, मुफलिसी दौर निकलने का दौर आता है, हमको तकदीर बदलने का हुनर आता है।

इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा. शैलेश सक्सेना, डा. रीटा शर्मा, कवि रोहित राकेश आदि मौजूद रहे।